

२/६

५०२

स्फाटिकमालिकां विदधंती पप्रासने
संस्थितां तां वंदे परमेश्वरि भगवति बु
द्धिपदांशारदां ॥ ७ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रस्ववि
जेशान्तिरुचिकमलैकल्यविस्पष्टशो
भममव्यभयानुकुलेकुमलिवनरुह
विश्ववंशां प्रियं प्रपे प्रपे प्रपे प्रविष्ट
पुण्यराजनमनोमोहसंपादयित्री प्रो
मुहुरन्नानकृष्टहृदिहृष्टयिरीहृदि

संसारसारे ॥ ऐं ऐं ऐं जाप्य तुष्टे हि
मस्तु चिमुकुटे बह्वक्त्रे व्यग्रहस्तोमा
होमात नमस्तु हृदय जटलादेहि बु
द्धिं प्रज्ञां विद्ये वेदां गीते श्रीरिप
रिप हिते समाहृतं मार्गमागारि
तस्वरूपे मन्त्रमन्त्रवन्दे नमस्तु
मन्त्रवन्दे ॥ श्री श्री श्री धारणावधु
लिमलिनु लिमि नोमि मिः किर्त्तनीये

निसे निस्तनु माते मु निजन न निरो
नुरा नेवे पु राणे पु ण्य पु ण्य प्रवा हु रु
हर न मा ते पू णे रा ते सु व णे मा ने मा त्रा
जि त वे म ति म ति म ति हे मा थ व पि ति
दाने ॥ ४ ॥ क्री क्री क्री स्व स्व रु पे ह ह ह
हु हु रि तां पु स्ता कं व्य गृ ह्णो सं रा ष्ठा
का र्थी ते स्मि रा मुख सु भू गे जं मि मि
सा म वि न्धे ॥ मो हे मु ग्ध प्र बो धे म म क

रुक्मतिः ध्याता विष्णुं स नीलये गीर्ग
वीं गारती लं क हि पृथार काने सिद्धिदे
सिद्धि साध्यो ॥ सोः सोः सोः नक्ति
विजेक मल भव मुखो भोज भूत स्वक
पर पा रूप प्रकाश सकल गुण मय
निगुण निर्विकारे न स्पृष्टे न व सूक्ष्मे
प्यविदित विमवे जाप्य विज्ञान वत्
विष्णु विष्णो रा रा ल सु र गण न निरो नि

सर

सति

कले निरुमुजे ॥ ५ ॥ स्तोमि तां तां न
वंधे मम रव लुर स नां ना क दा रि स जे
आ मा मे बुद्धि विरु आ म व तु म म मे ने
पा प मा द ही पा रा ॥ मा मे दु र वं क दा वि
ह चि ह पि स म ये पु र रा के ना कु ल हं रा
स्वे ना दे क वि ले प्र सर दु म म थी मा स्त
कुं थ क रा पि ॥ ७ ॥ इ हे ते चो क मु र्वे
प्र ति दि न मु प त्त र सो दि थो म ति न

मोवा व्यावाचस्पदेरप्यविदितवि
मवावाकपदः विष्णुमेवः। तस्यामो
प्यर्थतामः सुतमिव सदा तं पादितं
सा च देविसोमा ग्यं तास्य लोके प्रसर
दिक विता विष्णु मस्तं प्रिया तिका।
निर्विघ्नं तस्य विद्या प्रभवति सदा
या प्रतमं यवोधा कीरि स्त्रे लोके मध्य
निवसति वदने शारदा तस्य सा सार

सर

सुती

दिद्योयुक्तेनैव पूज्यं सकल गुणनिधिः
संरांराजमान्यावाग्देव्यासं प्रसासत्र
जगदिविजयिजायते सत्समास्तु ॥९॥
ब्रह्मचारीवृत्तिमौ नित्रयोदश्या निरा
मिपं ॥ सारस्वतज्ञातेः पाठे स्रोनेष्टा
र्थो हिलभ्यते ॥१०॥ पञ्चदश्यात्रयोदश्या
मेकविंशतिसंख्याया ॥ अविष्टेहं पदे
यस्तु सकविहं लभेष्टु वं ॥११॥ सर्व

पापविनिर्मुक्तः सुप्रगोळो कप्रजितः
वांछितं फलमाप्नोति लोके स्मिन्नात्र
संज्ञाय ॥ १२ ॥ इति श्रीनारदनंदिनेश्वर
संवादे ब्रह्मपुराणे स्कंदब्रह्मोक्तं सर
स्वविस्तोत्रं संपुष्पमस्तु ॥ १३ ॥ नमः ॥

592

२/४

५